शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

मन्नू भण्डारी और ममता कालिया की कहानियों में सामाजिकता के विविध आयाम

विनीता गुप्ता (शोधार्थी)
हिंदी साहित्य
बरकतुल्लाह विश्वविद्यालय
भोपाल, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

आधुनिक कहानियों की समृद्धि में महिला लेखिकाओं का विशेष योगदान रहा। इनमें आलोच्य कथा लेखिकाएं, मन्नू भण्डारी, ममता कालिया और उषा प्रियम्वदा का नाम उल्लेखनीय है। इन्होंने अपनी कहानियों में जीवन के विविध क्षेत्रों को समाहित किया है। जहाँ इनकी कहानियों में मनोवैज्ञानिकता है वहीं संवेग और द्‌वंद्‌व भी दिखायी देता है। यही नहीं बदलते मूल्यों, स्त्री-पुरूष सम्बन्ध और परिवर्तनशील मान्यतायें भी इनकी कहानियों में अभिव्यक्त हुयी हैं। इन सभी ने नारी के परम्परागत विद्रोही, कुण्ठित, आत्मकेन्द्रित और पुरूष सहयोगिनी स्वरूप को अपनी कहानियों में अभिव्यंजित किया है। इनकी कहानियों में भाषा और शिल्प के प्रति नयी दृष्टि भी दिखायी देती है। वस्तुत : इनकी कहानियाँ समाज का प्रतिबिम्ब हैं। इनमें जीवन के विविध आयाम समाहित हैं , सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, धार्मिक और आर्थिक आदि की विसगंतियों की अभिव्यक्ति मिलती है।

मन्नू भंडारी की कहानियाँ

मन्नू भण्डारी की कहानियाँ समाज , राजनीति, धर्म और संस्कृति के क्षेत्र में व्याप्त विडम्बनाओं और विद्रपताओं से सम्बन्धित हैं। इन्होंने नारी जीवन के सभी पक्षों को सपर्श किया है। लेखिका ने माँ, पत्नी, पुत्री, प्रेमिका आदि के रूप में नारी जीवन में आने वाली समस्याओं को जीवन्त रूप में व्यक्त किया है। इन्होंने जहाँ 'गीत का चुम्बन' कहानी में संस्कारों और परम्पराओं में जकड़ी आधुनिक नारी के प्रेम की कुण्ठाओं को चित्रित किया है वहीं नैतिक-अनैतिक के संघर्ष की अभिव्यक्ति भी की है। 'जीती बाजी की हार' कहानी में नारी का ममत्व दर्शित है। 'एक कमजोर लडक़ी की कहानी ' नामक कहानी में समाज की ऐसी नारी को दर्शाया गया है जो पति और प्रेमी दोनों के प्रति ईमानदार रहने में असफल हो जाती है। 'सयानी बुआ' में कठोर बुआ के परिस्थितिवश स्वभाव परिवर्तन को दर्शाया गया है। 'अभिनेता' कहानी में प्रेम में ठगी गई अविवाहित नारी की संवेदना व्यक्त हुयी है। जहाँ 'दीवार बच्चे और बरसात ' में शिक्षित नारी की त्रासदी चित्रित है वहाँ विवाहित नारी की वेदना और एकाकी जीवन को भी अभिव्यक्त किया गया है। 'दो कलाकार' कहानी में नारी की कर्तव्य भावना की प्रेरणा मिलती है। 'अकेली' कहानी में समाजसेविका नारी की उपेक्षा और आहत स्थिति को व्यक्त किया गया है। 'घुटन' कहानी में विवाहित और अविवाहित नारियों की परिस्थितियाँ घुटन का कारण बनती है। 'घर' कहानी में नारी के अंतर्द्‌वंद्‌व और स्वतंत्र व्यक्तित्व के प्रति आकर्षण दिखाया गया है, किंतु पुरूष के समक्ष नारी की हार नारी की

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

विवशता को दर्शाती है। 'मजबूरी' कहानी में बूढ़ी अम्मा जैसी नारियों के अकेलेपन को देखा जा सकता है। 'नकली हीरे ' में उच्च वर्ग और मध्यवर्ग की नारियों की मनोवृत्ति को दर्शाया गया है।

मन्नू जी ने आर्थिक परिस्थितियों से जूझती नारी का चित्रण भी प्रस्तुत किया है जो परिवार के दायित्वों को उठाते हुए टूट जाती है। 'नशा' जैसी कहानियों में मद्यप पति के प्रति परमेश्वर का भाव रखने वाली नारी को प्रस्तुत किया है। लेखिका ने 'रानी माँ का चबूतरा' जैसी कहानी में मजदूर नारी के स्वाभिमान और उसकी आत्मनिर्भरता को दर्शा कर नारी के उज्जवल चरित्र को व्यक्त किया है। कहीं 'यही सच है ' कहानी में नारी की किंकर्तव्यविमूढ़ता वित्रित की गई है। कहीं 'नई नौकरी' जैसी कहानी में उन्नति के लिए छटपटाती नारी की वेदना अभि व्यंजित है। कहीं 'एक प्लेट सैलाब ' कहानी में पाश्चात्य संस्कृति के प्रति अकार्षित नारियों की मनोवृत्ति दर्शित है। मन्नू जी ने 'एक बार ओर' कहानी में नारी की विवाह के प्रति अरुचि और मनोदशा को चित्रित किया है। 'बाँहों का घेरा ' कहानी नारी मनोवैज्ञानिकता और फ्रायड के सिद्धांत से प्रभावित है। 'ऊँचाई' कहानी में नारी के मन की ऊंचाई को महत्व दिया गया है दैहिक सम्बन्ध को नहीं। 'आते-जाते यायावर' में नारी की पुरूष जाति के प्रति प्रतिशोध भावना प्रबल हैं। 'शायद' कहानी में पारिवारिक परिस्थितियों से जूझती विवाहित नारी की स्थिति चित्रित है।

अस्तु मन्नू जी ने अपनी कहानियों में नारी जीवन के विविध पहलुओं को जीवन्त रूप में प्रस्तुत किया है। मन्नू जी की कहानियों में धर्म, संस्कृति, राजनीति, पुरूष प्रवृत्ति आदि से जुड़े प्रश्न भी उभरे हैं। यही नहीं इन्होंने नगरीय और ग्रामीण जीवन को भी सजीव रूप में चित्रित किया है। 'ईसा के इंसान ' कहानी में धार्मिक विडम्बना को उजागर किया है। जिसमें नारी शोषण और अन्याय का पर्दाफाश गया है। 'शमशान' कहानी में पुरूष की स्वार्थ भावना को व्यक्त किया गया है। कहीं 'पण्डित गजाधर शास्त्री' कहानी में गजाधर शास्त्री जैसे साहित्यकार की अहमन्यता को दर्शाया गया है , जो स्वयं को श्रेष्ठ साहित्यकार सिद्ध करने के प्रयास में तत्पर रहते हैं। लेखिका ने 'मैं हार गई' कहानी में युगीन राजनीतिक विसंगतियों और नेताओं के खोखले-आदर्शों को अभिव्यक्त करने के साथ उनकी विलासी-प्रवृत्ति का भी पर्दाफाश किया है। कहीं 'तीन निगाहों की एक तस्वीर ' में पुरूष की शंकालु प्रवृत्ति दर्शित है। 'अनचाही गहराईयाँ' कहानी में ज्ञान पिपासु निर्धन शिवनाथ की पीड़ा और वेदना दर्शनीय है। मन्नू जी ने 'खोटे सिक्के' में शोषित मजदूरों की दशा का वर्णन कर समाज के यथार्थ रूप को दर्शाया है। मन्नू जी ने 'सजा' कहानी में दूषित न्याय व्यवस्था पर प्रहार किया है। 'इन्कम टैक्स' और 'नींद' कहानी के माध्यम से लेखिका ने आत्मसम्मान के मिथ्या प्रदर्शन को नकारा है और अहमन्यता को ईष्या का कारण माना है। लेखिका ने 'छत बनाने वाले ' कहानी में संयुक्त परिवार में घर के मुखिया के नियन्त्रण की कठोरता को दर्शाया है। मन्नू जी ने 'रेत की दीवार' जैसी कहानी में युवा पीढ़ी की समस्या और बेरोजगारी को इंगित किया है मनुष्य सपने से जुड़ता है किंतु रेत की दीवार की भाँति ढह जाता है। लेखिका ने 'तीसरा हिस्सा' कहानी में ईमानदार साहित्यकारों और पत्रकारों की विवशता को दर्शा कर वर्तमान युग की विसंगतियों को उजागर किया है। 'अलगाव' कहानी में राजनीतिक

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

दावपेंच से प्रभावित साधारण व्यक्ति की त्रासदी को दर्शाया गया है। 'एखाने आकाश नाई' कहानी में नगरीय और ग्रामीण जीवन की विभिन्न समस्यायओं को उजागर किया गया है। अस्तु मन्नू भण्डारी की कहानियों में सामाजिकता के विविध आयाम उनकी प्रतिभा के द्योतक हैं।

ममता कालिया की कहानियाँ

ममता कालिया की कहानियाँ भी जीवन के विविध पक्षों से जुड़ी हैं। इनकी रचनाओं में भी सामाजिक समस्याओं , राजनीतिक विसंगतियों और सांस्कृतिक ह्रास आदि का सजीव चित्रण मिलता है। ममता कालिया ने समाज की भ्रष्ट व्यवस्था और मूल्यहीनता को अपनी कहानियों में दर्शाया है। इस दृष्टि से उनकी 'सुलेमान' कहानी (1989) साप्ताहिक हिन्दुस्तान नवम्बर (1989) में उल्लेखनीय है जिसमें एक युवक भ्रष्ट समाज का लाभ उठाकर उच्च पद पर आसीन हो जाता है। लेखिका ने इक्की सवीं सदी (साप्ताहिक हिन्दुस्तान, जनवरी 1987) में इक्कीसवीं सदी के स्वरूप को खोखला सिद्ध किया है। उनकी दृष्टि में विश्वविद्यालयों की अनियमितत ता और बड़े घर की बहू-बेटियों के होटल के बाथरूम से गायब हो जाने की घटनायें इस स्वप्न को साकार नहीं होने देंगी। ममता जी की दृष्टि नारी जीवन के विविध पक्षों को उजागर करने में लगी रहीं। इन्होंने 'मनहूसा बी' (साप्ताहिक हिन्दुस्तान 1 नवम्बर 1983) कहानी में कामकाजी नारियों की मानसिक पीड़ा और वाग्बाणों की व्यथा झेलने की विवशता को दर्शाया है। इसी प्रकार लेखिका की 'सीमा' (धर्मयुग 5 फरवरी 1989) कहानी में शादी और अच्छे घर के प्रति नारी की सोच दर्शायी गयी है। किंतु लेखिका लडक़ी की सुरक्षा में शादी को आवश्यक मानती है। ममता कालिया की कहानियाँ यथार्थ से जुड़ी हैं। वे समयधर्मी कहानीकार हैं। स्त्री शोषण और उत्पीडन को उन्होंने बारीकी से उकेरा है। ममता जी की कहानियों के नारी पात्र आजी भी शोषण के शिकार हैं। वे मुक्त जीवन के लिए तरस रही हैं। परिवार के सदस्यों द्वारा अपमानित होती हैं , बेमेल विवाह , दहेज की समस्या को झेलने पर विवश हैं । मनुष्य जितना अधिक आधुनिक होता गया नारी के प्रति उतना ही क्रूर होता गया। नारी के जीवन में ऊपरी तौर पर परिवर्तन तो आया पर उसकी विवशता , शोषण का अंत नहीं हुआ। 'छुटकारा', 'बोलने वाली औरत' आदि ऐसी ही कहानियाँ हैं।

उपेन्द्रनाथ अश्क ने लिखा है कि "मैं यहीं कह सकता हूँ कि ममता की रचनाओं में अपूर्व पठनीयता रही है। पहले वाक्य से उसकी रचना मन को बांध लेती है और अपने साथ बहाए लिए चलती है। कुछ उसी तरह जैसे उर्दू में कृष्णचंदर और हिंदी में जैनेन्द्र की रचनायें। यथार्थ का आग्रह न कृष्णचंदर में था न जैनेन्द्र कुमार में लेकिन ममता रूमानी या काल्पनिक कहानियाँ नहीं लिखतीं, उसकी कहानियाँ ठोस जीवन के धरातल पर टिकी हैं। निम्न मध्यमवर्गीय जीवन के छोटे-छोटे ब्योरों का गुम्फन, नश्तर का सा काटता तीखा व्यंगय और चुस्त-चुटीले जुमले उसकी कहानियों के प्रमुख गुण हैं। ममता की बहुत अच्छी तीन-चार कहानियों का मैं विशेष रूप से उल्लेख करना चाहूँगा 'बसंत-सिर्फ एक तारीख', 'लडक़ें ', 'माँ' और 'आपकी छोटी लडक़ी'।"

साप्ताहिक हिन्दुस्तान में पहली बार छपी ममता कालिया की 'आपकी छोटी लड़की' पर संपादकीय लिखते हुये मनोहर श्याम जोशी ने कहा कि , "ममता कालिया की कहानी आपकी छोटी लडक़ी से संकेत मिलता है कि साहित्यिक रचना भी

लोकप्रिय हो सकती है।" हिमांशु जोशी ने ममता जी से कहा था , "आपकी कहानी छापकर हमारा काम बहुत बढ़ जाता है। हर डाक में डाकिया सिर्फ आपकी कहानियों का बंडल डाल जाता है। " उपर्युक्त वक्तव्यों से ममता जी की लोकप्रियता और उनकी रचनाओं की श्रेष्ठता का पता चलता है। वे स्वयं लिखती हैं कि, "मैं अपनी हर कहानी पर शपथ पत्र लगा सकती हूँ कि यह कहानी मैंने बड़ी शिद्दत से महसूस करते हुए लिखी। हर कहानी को अपने कलेजे की गर्मी से सेंका और पकाया। कितना ही यथार्थ अपनी नसों पर झेला। कितना कुछ औरों को झेलते देखा। जिस वक्त जो लिखा उसमें अपनी पूरी ऊर्जा लगा दी। हर मूड में लिखा, हर हाल में लिखा। अपना गुस्सा , अपना प्यार, अपनी शिकायतें, अपनी परेशानियाँ तिरोहित करने में लेखन को हरसू मददगार पाया। जो कुछ रू-ब-रू कहने में सात जन्म लेने पड़ते, वह सब कुछ रचनाओं में किसी ने किसी के मुँह में डाल दिया। मेरा यकीन है कि लेखन से अच्छा जीवन साथी मुझे क्या किसी को भी नहीं मिल सकता।" कहा जा सकता है कि ममता कालिया आधुनिक काल की श्रेष्ठ रचनाकार हैं। यथार्थ और समयधर्मिता आपकी रचनाओं की विशेषता है।

संदर्भ ग्रन्थ

1 मैं हार गई, मन्नू भण्डारी, अक्षर प्रकाशन, 1973

2 तीन निगाहों की एक तस्वीर , मन्नू भण्डारी,श्रमजीवी प्रकाशन, संस्करण-3

3 मन्नू भण्डारी का कथा साहित्य , गुलाबराव हाड़े, प्रथम संस्करण 1987

4 ममता कालिया , दस प्रतिनिधि कहानियाँ , मार्च 2005

5 साप्ताहिक हिन्दुस्तान, जनवरी १९८७ ञ्च नवम्बर 1983

6 धर्मयुग ५ फरवरी 1989